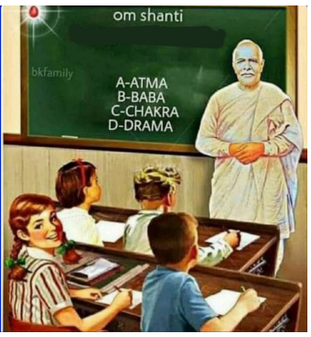

07-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Swamaan

"मीठे बच्चे - तुम बहुत रॉयल स्टूडेन्ट हो, तुम्हें बाप, टीचर और सतगुरू की याद में रहना है, अलौकिक खिदमत (सेवा) करनी है"

प्रश्नः- जो अपने आपको बेहद का पार्टधारी समझकर चलते हैं, उनकी निशानी सुनाओ?

उत्तरः- उनकी बुद्धि में कोई भी सूक्ष्म वा स्थूल देहधारी की याद नहीं होगी। वह एक बाप को और शान्तिधाम घर को याद करते रहेंगे क्योंकि बलिहारी एक की है। जैसे बाप सारी दुनिया की खिदमत करते हैं, पतितों को पावन बनाते हैं। ऐसे बच्चे भी बाप समान खिदमतगार बन जाते हैं।

Attention...!

ओम् शान्ति। पहले-पहले बाप बच्चों को सावधानी देते हैं। यहाँ बैठते हो तो अपने को आत्मा समझ बाप के आगे बैठे हो? यह भी बुद्धि में लाओ कि हम बाप के आगे भी बैठे हैं, टीचर के आगे भी बैठे हैं। नम्बरवन बात है - हम आत्मा हैं, बाप भी आत्मा है, टीचर भी आत्मा है, गुरू भी आत्मा है।

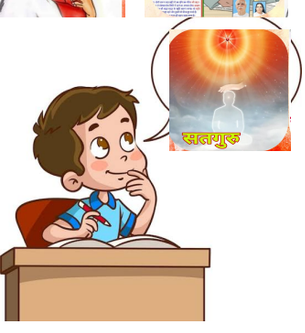

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

एक ही है ना। यह नई बात तुम सुनते हो। तुम कहेंगे बाबा हम तो कल्प-कल्प यह सुनते हैं। तो

बुद्धि में यह याद रहे, बाप पढ़ाते हैं, हम आत्मा इन आरगन्स द्वारा सुनती हैं। यह ज्ञान इस समय ही तुम बच्चों को मिलता है ऊंच ते ऊंच भगवान द्वारा। वह सभी आत्माओं का बाप है, जो वर्सा देते हैं। क्या ज्ञान देते हैं? सबकी सद्गति करते हैं यानी घर ले जाते हैं। कितने को ले जायेंगे? यह सब तुम जानते हो। मच्छरों सदृश्य सभी आत्माओं को जाना है। सतयुग में एक ही धर्म, पवित्रता-सुख-शान्ति सब रहता है। तुम बच्चों को चित्र पर समझाना बहुत सहज है। बच्चे भी नक्शे पर समझ जाते हैं ना। इंग्लैण्ड है, यह है फिर वह याद पड़ जाता है। यह भी ऐसे है। एक-एक स्टूडेन्ट को समझाना होता है, महिमा भी एक की है - शिवाए नम: ऊंच ते ऊंच भगवान। रचता बाप घर का बड़ा होता है ना। वह हद के, यह है सारे बेहद के घर का बाप। यह फिर टीचर भी है। तुमको पढ़ाते हैं। तो तुम बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। तुम स्टूडेन्ट भी रॉयल हो। बाप कहते हैं मैं साधारण

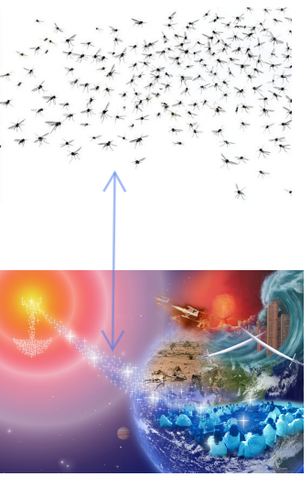

Example

कापारी खुशी

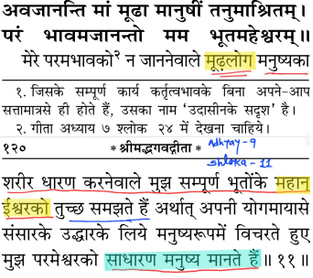

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्॥
मेरे परमभावको[2] न जाननेवाले मूढ़लोग मनुष्यका

१. जिसके सम्पूर्ण कार्य कर्तृत्वभावके बिना अपने-आप सत्तामात्रसे ही होते हैं, उसका नाम 'उदासीनके सदृश' है।
२. गीता अध्याय ७ श्लोक २४ में देखना चाहिये।

१२० * श्रीमद्भगवद्गीता * Adhyay-9 shloka-11

शरीर धारण करनेवाले मुझ सम्पूर्ण भूतोंके महान् ईश्वरको तुच्छ समझते हैं अर्थात् अपनी योगमायासे संसारके उद्धारके लिये मनुष्यरूपमें विचरते हुए मुझ परमेश्वरको साधारण मनुष्य मानते हैं॥ ११॥

Brahma

07-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तन में आता हूँ। प्रजापिता ब्रह्मा भी जरूर यहाँ चाहिए। उन बिगर काम कैसे चल सकता। और जरूर बुजुर्ग ही चाहिए क्योंकि एडाप्टेड हैं ना। तो बुजुर्ग चाहिए। श्रीकृष्ण तो बच्चे-बच्चे बोल न सके। बुजुर्ग शोभता है। बच्चे को थोड़ेही कोई बाबा कहेंगे। तो बच्चों को भी बुद्धि में आना चाहिए हम किसके आगे बैठे हैं। अन्दर में खुशी भी होनी चाहिए। स्टूडेन्ट कहाँ भी बैठे होंगे उनकी बुद्धि में बाप भी याद आता है। टीचर भी याद पड़ता है। उनको तो बाप अलग, टीचर अलग होता है। तुम्हारा तो एक ही बाप-टीचर-गुरू है। यह बाबा भी तो स्टूडेन्ट है। पढ़ रहे हैं। सिर्फ लोन पर रथ दिया हुआ है और कोई फ़र्क नहीं। बाकी तुम्हारे मुआफिक ही है। इनकी आत्मा भी यही समझती है जो तुम समझते हो। बलिहारी है ही एक की। उनको ही प्रभू ईश्वर कहते हैं। यह भी कहते हैं अपने को आत्मा समझ एक परमात्मा को याद करो, बाकी सब सूक्ष्म वा स्थूल देहधारियों को भूल जाओ। तुम शान्तिधाम के रहने वाले हो। तुम हो बेहद के पार्टधारी। यह बातें और कोई भी नहीं

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

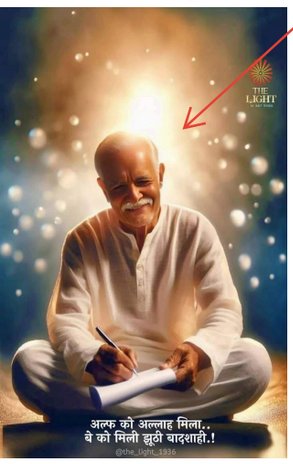

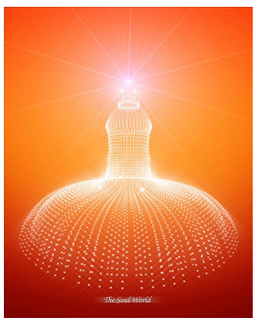

But, we Know it, How Lucky & Great we all are...!

जानते। दुनिया भर में किसको पता नहीं है, यहाँ जो आते हैं वह समझते जाते हैं। और बाप की सर्विस में आते जाते हैं। ईश्वरीय खिदमतगार ठहरे ना। बाप भी आये हैं खिदमत करने। पतितों को पावन बनाने की खिदमत करते हैं। राज्य गँवाकर फिर जब दु:खी होते हैं तो बाप को बुलाते हैं। जिसने राज्य दिया है, उनको ही बुलायेंगे।

But, we Know it, How Lucky & Great we all are...!

तुम बच्चे जानते हो बाप सुखधाम का मालिक बनाने आये हैं। दुनिया में यह किसको पता नहीं है। हैं तो सब भारतवासी एक धर्म के। यह है ही मुख्य धर्म। सो जरूर जब न हो तब तो बाप आकर स्थापन करे। बच्चे समझते हैं भगवान जिसको सारी दुनिया अल्लाह गॉड कह पुकारती है, वह यहाँ ड्रामा अनुसार कल्प पहले मुआफिक आये हैं।

यह है गीता का एपीसोड, जिसमें बाप आकर स्थापना करते हैं। गाया भी जाता है ब्राह्मण और देवी-देवता... क्षत्रिय नहीं कहते। ब्राह्मण देवी-देवता नम: कहते हैं क्योंकि क्षत्रिय तो फिर भी 2 कला कम हो गये ना। स्वर्ग कहा ही जाता है नई

दुनिया को। त्रेता को नई दुनिया थोड़ेही कहेंगे। पहले-पहले सतयुग में है एकदम नई दुनिया। यह है पुराने ते पुरानी दुनिया। फिर नये ते नई दुनिया में जायेंगे। हम अब उस दुनिया में जाते हैं तब तो बच्चे कहते हैं हम नर से नारायण बनते हैं। कथा भी हम सत्य नारायण की सुनते हैं। प्रिन्स बनने की कथा नहीं कहते। सत्य नारायण की कथा है। वह नारायण को अलग समझते हैं। परन्तु नारायण की कोई जीवन कहानी तो है नहीं। ज्ञान की बातें तो बहुत हैं ना इसलिए 7 रोज़ दिये जाते हैं। 7 रोज़ भट्ठी में रहना पड़े। परन्तु ऐसे भी नहीं यहाँ भट्ठी में रहना है। ऐसे तो फिर भट्ठी का बहाना कर बहुत ढेर आ जाएं। पढ़ाई सवेरे और शाम को होती है। दोपहर में वायुमण्डल ठीक नहीं होता है। रात्रि का भी 10 से 12 तक बिल्कुल खराब टाइम है। यहाँ तुम बच्चों को भी मेहनत करनी है, याद में रह सतोप्रधान बनने की। वहाँ तो सारा दिन काम-धंधे में रहते हो। ऐसे भी बहुत होते हैं जो धंधा धोरी करते फिर पढ़ते भी हैं जास्ती अच्छी नौकरी करने के लिए। यहाँ भी तुम पढ़ते हो तो टीचर को

याद करना पड़े जो पढ़ाते हैं। अच्छा, टीचर समझकर ही याद करो तो भी तीनों ही इकट्ठे याद आ जाते हैं - बाप, टीचर, गुरू, तुम्हारे लिए बहुत सहज है तो झट याद आने चाहिए। यह हमारा बाबा भी है, टीचर और गुरू भी है। ऊंच ते ऊंच बाप है जिससे हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। हम स्वर्ग में जरूर जायेंगे। स्वर्ग की स्थापना जरूर होनी है। तुम पुरुषार्थ सिर्फ करते हो ऊंच पद पाने लिए। यह भी तुम जानते हो। मनुष्यों को भी पता पड़ेगा, तुम्हारा आवाज़ फैलता रहेगा। तुम ब्राह्मणों का अलौकिक धर्म है - श्रीमत पर अलौकिक सेवा में तत्पर रहना। यह भी मनुष्यों को पता पड़ जायेगा कि तुम श्रीमत पर कितना ऊंच काम कर रहे हो। तुम्हारे जैसी अलौकिक सर्विस कोई कर न सके। तुम ब्राह्मण धर्म वाले ही ऐसा कर्म करते हो। तो ऐसे कर्म में लग जाना चाहिए, इसमें ही बिजी रहना चाहिए। बाप भी बिजी रहते हैं ना। तुम राजधानी स्थापन कर रहे हो। वह तो पंचायत मिलकर सिर्फ पालना करती रहती है। यहाँ तुम गुप्त वेष में क्या कर रहे हो। तुम हो इनकागनीटो,

Coming Soon...

Refer last page

07-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अननोन वारियर्स, नान-वायोलेन्स। इनका अर्थ भी कोई समझते नहीं हैं। तुम हो डबल अहिंसक सेना। बड़ी हिंसा तो यह विकार की है, जो पतित बनाती है। इनको ही जीतना है। भगवानुवाच काम महाशत्रु है, इन पर जीत पाने से ही तुम जगतजीत बनेंगे। यह लक्ष्मी-नारायण जगतजीत हैं ना। भारत जगत जीत था। यह विश्व के मालिक कैसे बनें! यह भी बाहर वाले समझ न सकें। इस समझने में बुद्धि बड़ी विशाल चाहिए। बड़े-बड़े इम्तहान पढ़ने वालों की विशालबुद्धि होती है ना। तुम श्रीमत पर अपना राज्य स्थापन करते हो। तुम किसको भी समझा सकते हो विश्व में शान्ति थी ना, और कोई राज्य नहीं था। स्वर्ग में अशान्ति हो न सके। बहिश्त को कहते ही है गॉर्डन ऑफ अल्लाह। सिर्फ बगीचा थोड़ेही होगा। मनुष्य भी चाहिए ना। अभी तुम बच्चे जानते हो हम बहिश्त के मालिक बन रहे हैं। तुम बच्चों को कितना नशा रहना चाहिए और ऊंच ख्यालात होने चाहिए। तुम बाहर के कोई भी सुख को नहीं चाहते हो। इस समय तुमको बिल्कुल सिम्पुल रहना है। अभी तुम ससुरघर जाते हो। यह

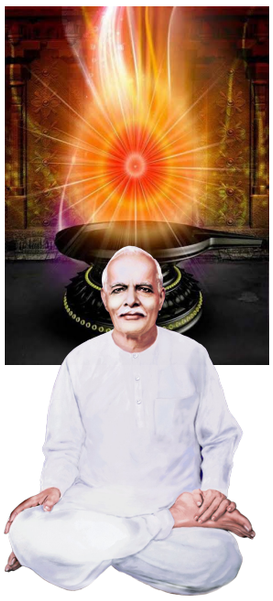

07-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

है पियरघर। यहाँ तुम्हें डबल पितायें मिले हैं। एक निराकार ऊंच ते ऊंच, दूसरा फिर साकार वह भी ऊंच ते ऊंच। अभी तुम ससुरघर विष्णुपुरी में जाते हो। उनको कृष्णपुरी नहीं कहेंगे। बच्चे की पुरी नहीं होती। विष्णुपुरी अर्थात् लक्ष्मी-नारायण की पुरी। तुम्हारा है राजयोग। तो जरूर नर से नारायण बनेंगे।

तुम बच्चे हो सच्चे-सच्चे खुदाई खिदमतगार। बाबा

Definition of..

सच्चा खुदाई खिदमतगार उसे कहते हैं जो कम से कम 8 घण्टा आत्म-अभिमानी रहने का पुरुषार्थ करते हैं। कोई कर्म-बन्धन न रहे तब खिदमतगार बन सकते हो और कर्मातीत अवस्था हो सकती है।

धर्मराज

राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसारे |

नर से नारायण बनना है तो कर्मातीत अवस्था जरूर चाहिए। कर्मबन्धन होगा तो सज़ा खानी पड़ेगी। बच्चे खुद समझते हैं - याद की मेहनत बड़ी कड़ी है। युक्ति बहुत सहज है, सिर्फ बाप को याद करना है। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। योग के लिए ही नॉलेज है, जो बाप आकर सिखलाते हैं। श्रीकृष्ण कोई योग थोड़ेही सिखलाते

हैं। श्रीकृष्ण को फिर स्वदर्शन चक्र दे दिया है। वह भी चित्र कितना रांग है। अभी तुमको कोई चित्र आदि भी याद नहीं करना है। सब कुछ भूलो। कोई में बुद्धि न जाए, लाइन क्लीयर चाहिए। यह है

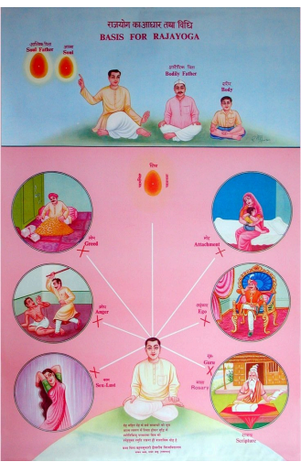

पढ़ाई का समय। दुनिया को भूल अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करना है, तब ही पाप नाश होंगे। बाप कहते हैं पहले-पहले तुम अशरीरी आये थे, फिर तुमको जाना है। तुम आलराउन्डर हो। वह होते हैं हद के एक्टर्स, तुम हो बेहद के।

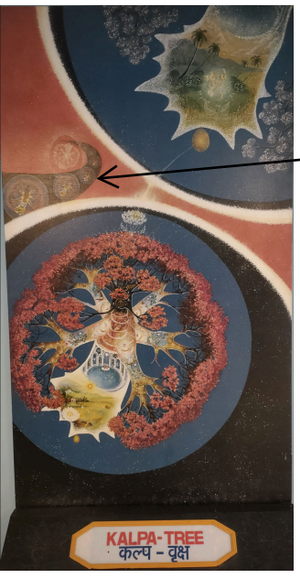

अभी तुम समझते हो हमने अनेक बार पार्ट बजाया है। अनेक बार तुम बेहद के मालिक बनते हो। इस बेहद के नाटक में फिर छोटे-छोटे नाटक भी अनेक बार चलते रहते हैं। सतयुग से कलियुग तक जो कुछ हुआ है वह रिपीट होता रहता है। ऊपर से लेकर अन्त तक तुम्हारी बुद्धि में है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन और सृष्टि का चक्र, बस, और कोई धाम से तुम्हारा काम नहीं। तुम्हारा धर्म बहुत सुख देने वाला है। उनका जब समय आयेगा तब वह आयेंगे। नम्बरवार जैसे-जैसे आये हैं, ऐसे ही फिर जायेंगे। हम और धर्म का क्या वर्णन करेंगे।

Point to ponder deeply

07-07-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तुमको सिर्फ एक बाप की ही याद रहनी है। चित्र आदि यह सब भूलकर एक बाप को याद करना है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भी नहीं, सिर्फ एक को। वह समझते हैं परमात्मा लिंग है। अब लिंग समान कोई चीज़ हो कैसे सकती। वह भला ज्ञान कैसे सुनायेंगे। क्या प्रेरणा से कोई लाउड स्पीकर रखेंगे जो तुम सुनेंगे। प्रेरणा से तो कुछ होता नहीं। ऐसे नहीं, शंकर को प्रेरते हैं। यह सब ड्रामा में पहले से ही नूँध है। विनाश तो होने का है ही। जैसे तुम आत्मायें शरीर द्वारा बात करती हो, वैसे परमात्मा भी तुम बच्चों से बात करते हैं। उनका पार्ट ही दिव्य अलौकिक है। पतितों को पावन बनाने वाला एक ही बाप है। कहते हैं मेरा पार्ट सबसे न्यारा है। कल्प पहले जो आये होंगे वह आते रहेंगे। जो कुछ भी पास्ट हुआ ड्रामा, इसमें ज़रा भी फर्क नहीं। फिर पुरुषार्थ का ख्याल रखना है। ऐसे नहीं ड्रामा अनुसार हमारा कम पुरुषार्थ चलता है फिर तो पद भी बहुत कम हो पड़ेगा। पुरुषार्थ को तेज करना चाहिए। ड्रामा पर छोड़ नहीं देना है। अपने चार्ट को देखते रहो। बढ़ाते रहो। नोट रखो हमारा चार्ट

As certain as Death...

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥

बढ़ता जाता है, कम तो नहीं होता है। बहुत खबरदारी चाहिए। यहाँ तुम्हारा है ब्राह्मणों का संग। बाहर में सभी है कुसंग। वह सभी उल्टा ही सुनाते हैं। अब बाप तुमको कुसंग से निकालते हैं।

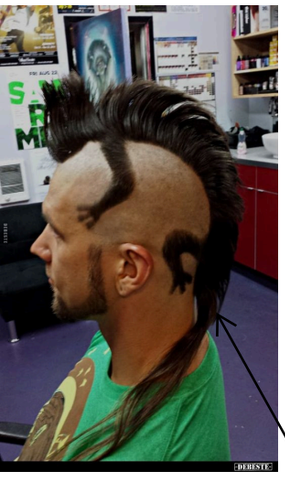

मनुष्यों ने कुसंग में आकर अपना रहन-सहन, अपनी पहरवाइस आदि सब बदल दी है, देश-वेष ही बदल दिया है, यह भी जैसे अपने धर्म की इनसल्ट की है। देखो कैसे-कैसे बाल बनाते हैं। देह -अभिमान हो जाता है। 100-150 रूपया देते हैं सिर्फ बाल बनाने के लिए। इसको कहा जाता है अति देह-अभिमान। वह फिर कभी ज्ञान उठा न सकें। बाबा कहते हैं बिल्कुल सिम्पुल बनो। ऊंची साड़ी पहनने से भी देह-अभिमान आता है। देह-अभिमान तोड़ने के लिए सब हल्का कर देना चाहिए। अच्छी चीज़ देह-अभिमान में लाती है।

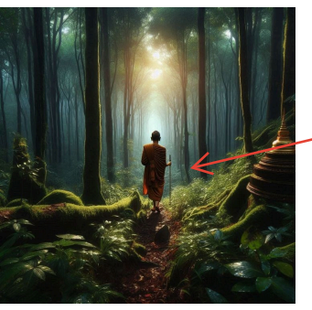

तुम इस समय वनवाह में हो ना। हर चीज़ से मोह हटाना है। बहुत साधारण रहना है। शादी आदि में भल रंगीन कपड़े आदि पहनकर जाओ, तोड़

निभाने अर्थ पहना, फिर घर में आकर उतार दिया। तुमको तो वाणी से परे जाना है। वानप्रस्थी सफेद पोश में होते हैं। तुम एक-एक छोटे-बड़े सब वानप्रस्थी हो। छोटे बच्चों को भी शिवबाबा की ही याद दिलानी है। इसमें ही कल्याण है। बस हमको अभी जाना है शिवबाबा के पास। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सदा ध्यान रहे कि हमारी कोई भी चलन देह-अभिमान वाली न हो। बहुत सिम्पुल रहना है। किसी भी चीज़ में ममत्व नहीं रखना है। कुसंग से अपनी सम्भाल रखनी है।

2) याद की मेहनत से सर्व कर्मबन्धनों को तोड़ कर्मातीत बनना है। कम से कम 8 घण्टा आत्म-अभिमानी रह सच्चा-सच्चा खुदाई खिदमतगार बनना है।

वरदान:-विशाल बुद्धि विशाल दिल से अपने पन की अनुभूति कराने वाले मास्टर रचयिता भव

मास्टर रचयिता की पहली रचना - यह देह है।

जो इस देह के मालिकपन में सम्पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेते हैं,

वे अपने स्नेह वा सम्पर्क द्वारा सर्व को अपनेपन का अनुभव कराते हैं।

उस आत्मा के सम्पर्क से 1 सुख की, 2 दातापन की, 3 शान्ति, 4 प्रेम, 5 आनंद, 6 सहयोग, 7 हिम्मत, 8 उत्साह, 9 उमंग किसी न किसी विशेषता की अनुभूति होती है।

उन्हें ही कहा जाता है विशालबुद्धि, विशाल दिल वाले।

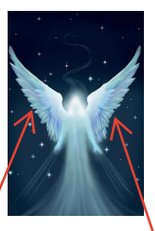

स्लोगन:- उमंग-उत्साह के पंखों द्वारा सदा उड़ती कला की अनुभूति करते चलो।

अव्यक्त इशारे - संकल्पों की शक्ति जमा कर श्रेष्ठ सेवा के निमित्त बनो

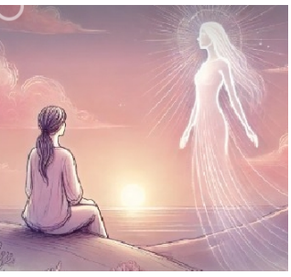

स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों से सम्पन्न बनाने के लिए ट्रस्टी बनकर रहो, ट्रस्टी बनना अर्थात् डबल लाइट फरिश्ता बनना। ऐसे बच्चों का हर श्रेष्ठ संकल्प सफल होता है।

एक श्रेष्ठ संकल्प बच्चे का और हजार श्रेष्ठ संकल्प का फल बाप द्वारा प्राप्त हो जाता है। एक का हजार गुणा मिल जाता है।

फाइनल पेपर

39

सभी अपने को निश्चय रूपी आसन पर स्थित अनुभव करते हो? निश्चय का आसन कभी हिलता तो नहीं है? किसी भी प्रकार की परिस्थिति या प्रकृति या कोई व्यक्ति निश्चय के आसन को कितना भी हिलाने का प्रयत्न करे, लेकिन वह हिला न सके - ऐसे अचल-अडोल आसन है? निश्चय के आसन में सदा अचल रहने वाला निश्चय-बुद्धि विजयन्ति गाया हुआ है। तो अचल रहने की निशानी है - हर संकल्प, बोल और कर्म में सदा विजयी। ऐसे विजयी रत्न स्वयं को अनुभव करते हो? किसी भी बात में हिलने वाले तो नहीं हो? जो समझते हैं कभी कोई बात में हलचल मच सकती है या कोई प्रकार का संकल्प भी उत्पन्न हो सकता है ऐसे पुरुषार्थी हाथ उठाओ? ऐसे कोई हैं जो समझते हों कि हाँ, हो सकता है? अगर हाथ न उठायेंगे तो पेपर बड़ा कड़ा आने वाला है, फिर क्या करेंगे? कोई भी मुश्किल पेपर आये उसमें सभी पास होने वाले हो तो पेपर की डेट अनाउन्स करें। सब ऐसे तैयार हो? फिर उस समय तो नहीं कहेगे कि यह बात तो समझी नहीं थी और सोची नहीं थी, यह तो नई बात आ गई है? निश्चय की परीक्षा है कि जिन बातों को सम्भव समझते हो, वह असम्भव के रूप में पेपर बन के आयेंगी, फिर भी अचल रहोगे?

Attention Please...!

कल्याणकारी बाप की श्रीमत पर चलने वाली आत्मायें सिवाय कल्याण के, चढ़ती कला के और कोई भी संकल्प कर नहीं सकती हैं। उनका हर संकल्प, हर कार्य के प्रति समय, वर्तमान का भविष्य के प्रति समर्थ संकल्प होगा, व्यर्थ नहीं होगा। घबराते तो नहीं हो? सामना करना पड़ेगा। पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना, अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। इसका मतलब यह तो नहीं समझते हो कि होना नहीं है। ड्रामा में जो होता रहा है, समय-प्रति-समय, उसमें माखन से बाल ही निकलता है न? कोई मुश्किल हुआ है? बाप-दादा नयनों पर बिठाये, दिल तख्त पर बिठाये पार करते ले आ रहे हैं ना? कोई क्या अन्त तक साथ निभाने का या किसी भी परिस्थितियों से पार ले जाने का वायदा व कार्य

So, Be Prepared..

निभायेंगे। नहीं साथ ले ही जाना है न। सर्वशक्तिमान साथी होते हुए भी यह संकल्प उत्पन्न होना - उसको क्या कहेगे? ऐसे व्यर्थ संकल्प समाप्त कर जिस स्थापना के कार्य के निमित्त हो, बाप-दादा के मददगार हो, उस कार्य में मग्न रहो। अपनी लगन की अग्नि को तीव्र करो। जिस लगन की अग्नि से ही विनाश की अग्नि तीव्र गति का स्वरूप धारण करेगी। अपने रचे हुए अविनाशी ज्ञान यज्ञ, जिसके निमित्त ब्राह्मण बने हुए हो, इस यज्ञ में पहले स्वयं की सर्व कमजोरियों व कमियों की आहुति डालो। तभी सारी पुरानी दुनिया को आहुति पड़ने के बाद समाप्ति होगी। अब दृढ़ संकल्प की तीली लगाओ। तब यह सम्पन्न होगा।

5/7/25

(08.02.1975)

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! तो फिर यह मनुष्य स्वयं न चाहता हुआ भी बलात् लगाये हुएकी भाँति किससे प्रेरित होकर पापका आचरण करता है? ॥ ३६ ॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

श्रीभगवान् बोले—रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगोंसे कभी न अघानेवाला और बड़ा पापी है, इसको ही तू इस विषयमें वैरी जान॥ ३७॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

जिस प्रकार धूएँसे अग्नि और मैलसे दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेरसे गर्भ ढका रहता है, वैसे ही उस कामके द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है॥ ३८॥

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च॥

और हे अर्जुन! इस अग्निके समान कभी न पूर्ण होनेवाले कामरूप ज्ञानियोंके नित्य वैरीके द्वारा मनुष्यका ज्ञान ढका हुआ है॥ ३९॥

Enemy Forever

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्॥

इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि—ये सब इसके वासस्थान कहे जाते हैं। यह काम इन मन, बुद्धि और इन्द्रियोंके द्वारा ही ज्ञानको आच्छादित करके जीवात्माको मोहित करता है॥ ४०॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥

इसलिये हे अर्जुन! तू पहले इन्द्रियोंको वशमें करके इस ज्ञान और विज्ञानका नाश करनेवाले महान् पापी कामको अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल॥ ४१॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥

इन्द्रियोंको स्थूल शरीरसे पर यानी श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म कहते हैं; इन इन्द्रियोंसे पर मन है, मनसे भी पर बुद्धि है और जो बुद्धिसे भी अत्यन्त पर है वह आत्मा है॥ ४२॥

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

इस प्रकार बुद्धिसे पर अर्थात् सूक्ष्म, बलवान् और अत्यन्त श्रेष्ठ आत्माको जानकर और बुद्धिके द्वारा मनको वशमें करके हे महाबाहो! तू इस कामरूप दुर्जय शत्रुको मार डाल॥ ४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

Formidable Enemy

~~o~~

Biggest enemy of soul/human Being is not any person/religion, but the 'Kaam vikar' is.

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषकी उन विषयोंमें आसक्ति हो जाती है, आसक्तिसे उन विषयोंकी कामना उत्पन्न होती है और कामनामें विघ्न पड़नेसे क्रोध उत्पन्न होता है॥ ६२॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोधसे अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भावसे स्मृतिमें भ्रम हो जाता है, स्मृतिमें भ्रम हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्तिका नाश हो जाता है और बुद्धिका नाश हो जानेसे यह पुरुष अपनी स्थितिसे गिर जाता है॥ ६३॥

↑ Soul

विषयो के चिंतन से आसक्ति
आसक्ति से कामना/काम
कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध
क्रोध से *अत्यंत* मूढ़भाव
मूढ़भाव से स्मृतिमें भ्रम
स्मृति में भ्रम से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश
बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष(आत्मा) अपनी स्थिति से गिर जाता है।

गीता अध्याय 2 - श्लोक 62,63

So, ultimate Root cause as per revered "Geeta" is

Kaam vikar